

## आधुनिक विद्या निकेतन ट्यूशन सेंटर

### निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों का उत्तर दें :

पेंसिल की कहानी बहुत पुरानी नहीं है। करीब छः सौ वर्ष पहले जर्मनी में ग्रेफाइट की चट्टानें मिलीं। इनका कोई टुकड़ा लेकर कागज या पत्थर पर लिखा जाता, तो निशान या लकीरे बन जाती। इसके कोई डेढ़ सौ साल बाद इंग्लैंड में शुद्ध ग्रेफाइट की चट्टान मिली। पहले गड़रियों को इनका पता चला। वे ग्रेफाइट की चट्टान का टुकड़ा लेकर अपनी भेड़ों पर निशान लगा देते। इससे उन भेड़ों की अलग से पहचान हो जाती थी।

फ्रांस के निकोलस जेटकांते और ऑस्ट्रेलिया के जोसफ हडथरमुथ ने सबसे पहले पेंसिल बनाने में कामयाबी हासिल की। अब तो इतनी सुन्दर पेंसिल बनती है कि बच्चे उन्हें पाने के लिए मचल उठते हैं। अब पेंसिल पर सुन्दर सुन्दर बच्चों के हसते खेलते चित्र होते हैं। कुछ पर पक्षियों और जानवरों के भी चित्र होते हैं। वे इतनी रंग बिरंगी होती हैं कि उन्हें हाथ में लिए बगैर चैन ही नहीं पड़ता।

**1. करीब छः सौ वर्ष पहले जर्मनी में किसकी चट्टानें मिलीं?**

उत्तर : जर्मनी में छः सौ वर्ष पहले ग्रेफाइट की चट्टानें मिली थीं।

**2. ग्रेफाइट के टुकड़े से कागज या पत्थर पर लिखने से क्या बन जाता है?**

उत्तर : ग्रेफाइट के टुकड़े से कागज या पत्थर पर लिखने से लकीरें बन जाती थीं।

**3. ग्रेफाइट की शुद्ध चट्टानें सबसे पहले कहाँ मिलीं?**

उत्तर : ग्रेफाइट की शुद्ध चट्टानें सबसे पहले इंग्लैंड में मिलीं।

**4. गड़रिये ग्रेफाइट से क्या करते थे?**

उत्तर : गड़रिये ग्रेफाइट के टुकड़े से भेड़ों पर निशान लगाते थे।

**5. सबसे पहले पेंसिल बनाने में किसने कामयाबी हासिल की?**

**उत्तर :** सबसे पहले फ़्रांस के निकोलस जेटकांते और ऑस्ट्रेलिया के जोसफ हडथरमुथ पेंसिल बनाने में सफल हुए ।